श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुणसूक्त

हिंदी काव्यानुवाद (भावार्थ सहित)

महर्षि दीर्घतमस द्वारा संस्कृत में रचित सूक्त का हिंदी काव्यानुवाद

कवि

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

श्री राम कथा संस्थान पर्थ उद्देश्य

- श्री राम कथा संस्थान भगवान् स्वामी श्री रामानंद जी महाराज (१४वीं शताब्दी) की शिक्षाओं पर आधारित एक सनातन वैष्णव धार्मिक संस्था है।
- श्री संस्थान का सिद्धांत धर्म, जाति, लिंग एवं नैतिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव रहित है। 'हरि को भजे सो हरि को होई' संस्थान का मूल मन्त्र है।
- श्री संस्थान का मानना है कि शुद्ध हृदय एवं निःस्वार्थ भाव भक्ति ईश्वर को अति प्रिय है। सभी प्रभु-भक्त एक दूसरे के भाई बहन हैं।
- ब्रह्म मनोभाव: भगवान् श्री राम, माता सीता एवं उनके विविध अवतार ही सर्वोच्च ब्रह्म हैं। वह सर्व-व्याप्त एवं विश्व के सरंक्षक हैं।
- आत्मा मनोभाव: आत्मा का अस्तित्व सर्वोच्च ब्रह्म के परमानंद पर निर्भर है। आत्मा को सर्वोच्च ब्रह्म ही निर्देशित एवं प्रबुद्ध करते हैं। श्री राम, माता सीता एवं उनके अवतार ही जीवन का अंतिम उद्देश्य मोक्ष दिलाने में समर्थ हैं।
- माया मनोभाव: माया प्रकृति के तीन गुण - सत, रज और तमस, के प्रभाव से प्राकट्य होती है। माया को सर्वोच्च ब्रह्म ही नियंत्रित करने में समर्थ हैं। सर्वोच्च ब्रह्म पर ध्यान केंद्र करने से माया का विनाश होता है, और जन्म-मृत्यु के चक्र से छुटकारा मिल मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- श्री संस्थान इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निरंतर सनातन धार्मिक पत्रिकाएं, पुस्तकें, पुस्तिकाएं, काव्य ग्रन्थ आदि की रचनाएं एवं प्रकाशन करती है। साथ ही, समय समय पर श्री राम एवं अन्य धार्मिक कथाओं के संयोजन का भी प्रयास करती रहती है।

क्रमिका

संक्षिप्त परिचय: महर्षि दीर्घतमस 4
अथ श्री विष्णुसूक्तम् 9
अथ श्री मित्रावरुणसूक्तम्..... 14

संक्षिप्त परिचय: महर्षि दीर्घतमस

महर्षि दीर्घतमस का सीधा सम्बन्ध ब्रह्मदेव की वंशावली से है। वह ब्रह्मपुत्र महर्षि अंगीरस के पौत्र एवं महर्षि उतथ्य के पुत्र हैं।

महर्षि दीर्घतमस के दादाश्री महर्षि अंगीरस ब्रह्मदेव के तृतीय मानस पुत्र माने जाते हैं। वह सप्त-ऋषिओं में से एक महान महर्षि हैं जिनको प्रथम मन्त्रद्रष्टा के रूप में भी जाना जाता है। महर्षि अंगीरस अथर्ववेद के ज्ञाता के रूप में भी जाने जाते हैं। वह अग्निदेव के उपासक हैं। इन्होंने अग्निदेव की उपासना में अनेक श्लोकों की रचना की है। महर्षि अंगीरस खगोल विज्ञान के आविष्कारक भी जाने जाते हैं। हमारी भारतीय सनातन धर्म पद्धिति में यज्ञोपवीत संस्कार में महर्षि अंगीरस का आवाह्न किया जाता है।

मेघाम मह्यम अंगीरसः। मेघाम सप्तऋषये ददुः ।।
मेघाम मह्यम प्रजापतिः। मेघाम अंगीर ददातु में ।।

स्मृति, सुरूपा एवं स्वधा इनकी तीन धर्म-पत्नियां हैं। महर्षि उतथ्य, महर्षि समवर्त, और देवगुरु बृहस्पति इनके पुत्र हैं।

महर्षि अंगीरस से सम्बंधित अनेक पौराणिक कथाएं हैं। ऐसा माना जाता है कि जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म और पुनर्जन्म के ऋण-अनुबंध कारणों का ज्ञान सर्व प्रथम महर्षि अंगीरस के द्वारा ही दिया गया था। हमारे समस्त सम्बन्ध - माता-पिता, पुत्र-पुत्री, पौत्र-पौत्री, घनिष्ठ सम्बन्धी एवं मित्र गण, सभी हमारे कर्मों के ऋण-अनुबंध हैं।

कथा कुछ ऐसी है कि प्राचीन काल में चित्रगुप्त नाम के एक अत्यंत धार्मिक, कर्मनिष्ठ, न्याय प्रिय एवं प्रजा के हितैषी सम्राट थे। अभाग्य से वह निःसंतान थे। एक बार महर्षि अंगीरस अपने भ्राता ब्रह्मऋषि नारद के साथ सम्राट चित्रगुप्त के दरबार पहुंचे। सम्राट ने दोनों ही ब्रह्मपुत्रों का बड़ा सम्मान किया। ब्रह्मपुत्रों ने देखा, महाराज अत्यंत चिंतित हैं। कारण पूछा। सम्राट ने कहा, 'हे भगवन, आप तो अन्तर्यामी हैं। सब कुछ जानते हैं फिर भी मुझ से मेरी चिंता का कारण पूछते हैं। मेरे कोई संतान नहीं है। इस साम्राज्य का मेरे बाद क्या होगा?'

महर्षि अंगीरस ने महाराज को समझाने के अत्यंत प्रयत्न किए और कहा, 'हे सम्राट, आपकी कुंडली में पुत्र योग नहीं है। यह भगवान् की आप के ऊपर अत्यंत कृपा है। इसी से आपको सुख-शांति है। पुत्र-पुत्री जन्म एक कर्मों का ऋण-अनुबंध है। पुत्र-पुत्री आपके किसी अनायास बुरे कर्म का भी प्रभाव हो सकता है, जो आपको शत्रु बनकर कष्ट दे सकते हैं। अतः इसे भगवान् का आशीर्वाद मानकर आप संतुष्ट होईए कि आपको कोई कष्ट पहुंचाने वाला नहीं है। रही बात साम्राज्य की, तो न तो आप साम्राज्य लेकर आये थे और न ही अपने मरण-उपरान्त लेकर जाएंगे। हरि का यह साम्राज्य है। वह कोई आपका उत्तराधिकारी अवश्य ढूंढ लेंगे। यह आवश्यक नहीं कि आपका उत्तराधिकारी आपका पुत्र ही हो।'

लेकिन सम्राट पर तो पुत्र प्राप्ति का मोह चढ़ा हुआ था, अथवा कहिये उन्हें अपने किसी ऋण-अनुबंध का फल भोगना था। सम्राट ने महर्षि अंगीरस के चरण पकड़ लिए और कहने लगे, 'हे भगवन, मुझे ज्ञान नहीं, पुत्र चाहिए। अगर आपने मुझे पुत्र नहीं दिया तो मैं आपके चरणों में अपना जीवन समाप्त कर दूंगा।'

महर्षि अंगीरस के निर्देशानुसार तब ब्रह्मऋषि नारद ने आशीर्वाद देते हुए कहा, 'एवमस्तु'।

ब्रह्मऋषि नारद के आशीर्वाद से तब सम्राट चित्रकेतु को पुत्र की प्राप्ति हुई। उनके कई रानियां थीं। इन पुत्र की माँ राजमाता को सब से अधिक सम्मान मिलने लगा। राजकुमार सम्राट के अत्यंत प्रिय थे। उनका अधिकतर समय राजकुमार और राजमाता के साथ ही बीतने लगा। इस से अन्य रानियों को ईर्ष्या होने लगी। वह हर संभव अवसर ढूंढती रहतीं कि किस तरह इस राजकुमार का अंत किया जा सके। अंततः जब राजकुमार ६ वर्ष के हुए तो रानियों को अवसर मिल ही गया। उन्हें विष खिलाकर मार दिया गया। अब सम्राट की हालत तो बस कुछ पूछो ही नहीं। दुःख में सब कुछ, राज्य-साम्राज्य, खाना-पीना, ईश्वर-उपासना, सभी भूल गए। उनके राज-पुरोहित ने महर्षि अंगीरस का आवाह्न किया। फिर से महर्षि अंगीरस अपने भ्राता ब्रह्मऋषि नारद के साथ पहुंचे। सम्राट ने उन दोनों के चरण पकड़ लिए और विनती करने लगे, 'हे ब्रह्मपुत्रो, आप तो यौगिक देवता हैं। मेरे पुत्र को जीवित करो अन्यथा मैं शरीर त्याग दूंगा।'

ब्रह्मऋषि नारद बोले, 'हे राजन, हम तुम्हारे पुत्र को जीवित अवश्य कर देंगे, लेकिन एक शर्त है। यह तभी संभव होगा जब वह स्वयं जीवित रहना चाहें।'

सम्राट को आश्चर्य हुआ। वह बोले, 'भगवन, मेरा पुत्र मुझे अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता है। आप जीवित तो कीजिये, वह मेरे गले से लिपट जाएगा।'

महर्षि अंगीरस के आदेश पर ब्रह्मऋषि नारद ने पुत्र में प्राण डाल दिए। उठते ही पुत्र ने दोनों महर्षियों के चरण छूए, लेकिन सम्राट की ओर एक दृष्टि भी नहीं डाली। पुत्र बोले, 'हे भगवन, मुझे मोक्ष शान्ति से आपने क्यों बुला लिया? मैं तो विष्णुलोक में भगवान् नारायण के समीप उनकी स्तुति का आनंद उठा रहा था। आपके आदेश से मुझे भू लोक में आना पड़ा। अब आज्ञा दीजिये।'

ब्रह्मऋषि नारद बोले, 'हे पुत्र, सम्राट तुम्हें बहुत प्रेम करते हैं, और तुम्हें जीवित देखने के लिए उतावले हैं। क्या तुम जीवित रहना चाहोगे ?'

पुत्र हंसा। उसने ब्रह्मऋषि नारद के चरण पकड़ लिए और कहने लगा, 'हे भगवन, आप तो सर्वद्रष्टा हैं। जानते ही हैं कि मैं पूर्व जन्म में इनका पड़ोसी राजा था। इन्होंने मेरे राज्य पर आक्रमण किया। मुझे हराया। मैं वीरगति को प्राप्त हुआ। एक क्षत्रिय जब देश की सेवा में वीरगति को प्राप्त होता है तो उसे विष्णु लोक की प्राप्ति होती है। मैं तो विष्णु लोक में नारायण की सेवा में आनंद ले रहा था कि आपके आदेश से मुझे मृत्युलोक में फिर आना पड़ा। यह तो मेरे शत्रु हैं। कौन पिता? जिस अवस्था में दुःखी हो मैंने वीरगति पाई और अपने परिवार को असहनीय दुःख दिया, वही इनकी अवस्था कर मैंने अपना बदला ले लिया। मेरा बदला पूरा हुआ। आप मुझे विष्णु लोक में जाने की आज्ञा दीजिये।'

यह सुन सम्राट स्तब्ध हो गए। कुछ नहीं बोले। उनकी मूक स्वीकृति से ब्रह्मऋषि नारद ने पुत्र को वापस विष्णु लोक में भेज दिया। तब महर्षि अंगीरस ने सम्राट चित्रगुप्त को सनातन ज्ञान दिया। जन्म, मृत्यु, पुनर्जन्म, कर्मों का फल और ऋण- अनुबंधों के बारे में बताया, जिस से सम्राट चित्रगुप्त का मोह जाता रहा।

ऐसे ज्ञानी हैं महर्षि अंगीरस।

इनके पुत्रों में से एक हैं, महर्षि उतथ्य, जो महर्षि दीर्घतमस के पिता हैं। महर्षि उतथ्य 'उतथ्य गीत' के रचयिता हैं, तथा दर्शन शास्त्र के विशेषज्ञ के रूप में जाने जाते हैं।

महर्षि उतथ्य अत्यंत ज्ञानी एवं परम शक्तिशाली महर्षि हैं। इन्होंने पारिवारिक परम्परा रखते हुए अथर्व एवं ऋग्वेद के कई श्लोकों की विवेचना भी की है। इनकी दो पत्नियों थीं, सोमा और ममता। सोमा महर्षि अत्रि की पुत्री थीं। उनकी दूसरी पत्नी ममता ने महर्षि दीर्घतमस को जन्म दिया।

महर्षि दीर्घतमस, जिन्हें महर्षि रहुगन के नाम से भी जाना जाता है, जन्म से अंधे होते हुए भी महाज्ञानी महर्षि हैं। वह खगोल शास्त्र के विशेष ज्ञाता हैं। इन्होने ऋग्वेद के छठे अध्याय की रचना की है। महर्षि दीर्घतमस ने सहस्रों वर्ष पूर्व राशि चक्र के ३६० अंश में होने का प्रमाण दिया। महर्षि दीर्घतमस ने 'ईष्यावामनष्य' सूत्र की रचना की। 'एकम सदविप्रा बहुदा वदमाती' का प्रथम ज्ञान महर्षि दीर्घतमस ने ही दिया जिसने एक-ईश्वरवाद एवं बहु-ईश्वरवाद को भली भांति समझाया तथा बतलाया कि यह दोनों एक ही हैं। महर्षि दीर्घतमस ने अपनी पारिवारिक परम्परा को रखते हुए ऋग्वेद के कई श्लोकों की रचना भी की। महर्षि दीर्घतमस भारत वर्ष के जन्मदाता महाराज भरत (सम्राट दुष्यंत एवं साम्राज्ञी शकुंतला के पुत्र) के मार्ग दर्शक गुरु एवं राज-पुरोहित थे। उन्हीं के निर्देश पर आर्यावृत देश का नाम भारत पड़ा। महर्षि दीर्घतमस की धर्मपत्नी का नाम प्रदवेश था। इनके पुत्र महर्षि गौतम हुए।

महर्षि दीर्घतमस ने सम्राट भरत के राज-पुरोहित होते हुए सामाजिक कानूनों की व्यवस्था की। उनमें से एक महत्वपूर्ण कानून था, महर्षि मनु द्वारा रचित विवाह संस्कार एवं स्त्रियों के अधिकार का नियम लागू करना।

महर्षि दीर्घतमस ने अनेक ग्रंथों एवं सूक्तों की रचना की। श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुण सूक्त इन्हीं की देन है।

भगवान् महर्षि वेद व्यास जी ने स्पष्ट कहा है कि जो भी प्राणी वर्ष में एक बार भी श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् एवं नियमित रूप से श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुणसूक्त का जाप करेंगे उनके गृह में कलि का वास कभी नहीं होगा। श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्, श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुणसूक्त का पाठ करने वाले

व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होगा, तथा उनकी सभी मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे ।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः ।।

श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम्, श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुणसूक्त कठिन संस्कृत भाषा में रचित महान ग्रन्थ हैं। सामान्य व्यक्तियों को इनके उच्चारण में अत्यंत कठिनाई होती है। गुरुदेव की आज्ञा से कुछ वर्ष पूर्व मैंने श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्तोत्रम् का हिंदी काव्यानुवाद किया था। यह हिंदी काव्यानुवाद अत्यंत प्रचिलित ग्रन्थ बन गया है। मैं यहां श्री विष्णुसूक्त एवं मित्रावरुणसूक्त का हिंदी काव्यानुवाद प्रस्तुत करता हूँ। श्रुति के अनुसार यह सभी ग्रन्थ सबके लिए अत्यंत उपयोगी है। भगवान् से आप सब के लिए सुख शांति और समृद्धि की याचना के साथ यह काव्य प्रस्तुत है।

मैं कोई संस्कृत का ज्ञानी पंडित नहीं हूँ, अतः शब्दार्थ अथवा शब्द-विन्यास में कोई त्रुटि हो गई हो तो मैं क्षमा प्रार्थी हूँ। मेरा उद्देश्य साहित्यिक न होकर भक्ति पूर्ण भावना से प्रेरित है।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

हरि विष्णु से आप सब के स्वास्थ्य, ऐश्वर्य, धन-धान्य, यश, ईश-प्रेम एवं प्रभु कृपा की कामना करते हुए, प्रभु के चरणों में आपका अपना,

डॉ यतेंद्र शर्मा

श्री राम कथा संस्था पर्थ
३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज़, ऑस्ट्रेलिया, ६०२५
Website: https://shriramkatha.org
Email: srkperth@outlook.com

अथ श्री विष्णुसूक्तम्

करूँ मैं पराक्रम वर्णन। विष्णु अति पूजनीय भगवन।।
किए वह सृजन यह त्रिभुवन। माध्यम त्रिपद गति संपन्न।।(१)

भावार्थ: मैं भगवान् विष्णु, जो अति पूजनीय हैं, उनके पराक्रम का वर्णन करता हूँ। उन्होंने गति संपन्न तीन पग के माध्यम से त्रिलोकों की रचना की।

किए सृजित मेलस्थान भगवन। करें वास जहां आत्मा पावन।।
हैं वह चर अचर व्यापक भुवन। प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष हैं निःसीमन्।।(२)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ने विशाल मेलस्थान का निर्माण किया, जहां पवित्र आत्माओं का वास है। वह विश्व में व्यापक चर एवं अचर हैं। वही प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष स्वरुप में अनंत हैं।

हैं उन्हीं से सत रज तम गुन। वही सृजक यह विशेष त्रिगुन।।
इस धूल धूसरित समस्त भुवन। हैं सर्वव्यापक विष्णु भगवन।।(३)

भावार्थ: उन्हीं से सत, रज एवं तम गुण हैं। वही इन त्रिगुणों के सृजक हैं। इस धुल धूसरित (दूषित) समस्त विश्व में भगवान् विष्णु सर्व-व्यापक हैं।

देख न सकें उन्हें लौकिन नयन। दुर्लभ दर्शन ऐहिक भूजन।।
योग ध्यान से संभव दर्शन। कहे यही सब ग्रन्थ सनातन।।(४)

भावार्थ: उन्हें सांसारिक नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। लौकिक मनुष्यों को उनके दर्शन दुर्लभ हैं। वह योग एवं ध्यान से ही दृष्टिगोचर होते हैं, ऐसा सब सनातन ग्रन्थ कहते हैं।

करें निवास अंदर सब भूजन। जो सृजित हेतु विष्णु भगवन।।
करें प्रदान वही जीवन। हैं वही आधार इस त्रिभुवन।।(५)

भावार्थ: भगवान् विष्णु द्वारा निर्मित इस संसार में ही सभी जीव के अंदर निवास करते हैं। वही जीवन प्रदान करने वाले इस त्रिलोक के आधार हैं।

हैं मानित सुर असुर भूजन । हैं मध्य मृग सिंह निरूपन ।।
हों भीत जैसे मृग केशिन् । सम हों भीरु हरि से दुर्जन ।। (६)

भावार्थ: वह (भगवान् विष्णु) सभी नर, सुर एवं असुरों के पूज्य हैं। वह हिरणों के मध्य सिंह स्वरुप हैं। जिस प्रकार हिरन सिंह से भयभीत रहता है, उसी प्रकार दुष्ट लोग हरि से भयभीत रहते हैं।

हैं वह धर्मीयों के भगवन । करें न्याय सत असत कर्म जन ।।
हैं सच्चिदानंद नारायन । करें अभय प्रिय संत भक्तगन ।। (७)

भावार्थ: वही धर्मावलम्बीयों (पुरुषों एवं नारियों) के ईश्वर है। वही प्राणियों के अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय करने वाले हैं। वही परम आनंद देने वाले प्रभु हैं जो अपने प्रिय संत एवं भक्तों को निर्भय कर देते हैं।

कहें महर्षि दीर्घतमस महन । सुनो प्रभामंडल भगवन ।।
करो उन्हें सदा सतत नमन । किए विस्तार जो त्रिपद भुवन ।। (८)

भावार्थ: महात्मा महर्षि दीर्घतमस कहते हैं, 'प्रभु के महात्म्य को सुनो। अपने तीन पगों से जिन्होंने जग का विस्तार किया, उन्हें नमन करो।'

हैं अविनाशी हरि नारायन । करें धारण शीश त्रिभुवन ।।
सब धरा पाताल और गगन । करें पालन हरि निर्देशन ।। (९)

भावार्थ: अविनाशी प्रभु श्री विष्णु तीनों भुवनों (पृथ्वी, आकाश एवं पाताल) को अपने शीश पर धारण करते हैं। समस्त पृथ्वी, आकाश एवं पाताल को प्रभु निर्देशित करते हैं (अर्थात उनकी कृपा से ही इनका निर्वाह होता है)।

जो करे ध्यान हरि नारायन । हो आंनदित सुभग इस भुवन ।।
हो ओजस्वित समान द्युवन् । फैले यश समस्त दिशा देशन ।। (१०)

भावार्थ: भगवान् विष्णु के ध्यान से आनंद एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है। (जो भगवान् विष्णु की स्तुति करता है) सूर्य समान ओजस्वित होकर वह हर देश और दिशा में कीर्तिमान होता है।

पाऊँ हरि निवास है मन्मन् । हो मुक्ति इस चक्र जन्म मरन ।।
ले सकूं मधुसरोवर शरन । करूँ दर्शन सदा नारायन ।। (११)

भावार्थ: जन्म मृत्यु के चक्र से छुटकारा पाकर मैं विष्णु लोक में निवास करूँ, ऐसी इच्छा है। (प्रभु धाम में) मधुसरोवर के निकट आश्रय पा भगवान् विष्णु के सदा दर्शन करूँ।

कर सदैव ध्यान श्री भगवन । सम वर्णित वेद हो जीवन ।।
पाएं तब नर नारि निर्मोचन । सुख शान्ति आनंद उनके मन ।। (१२)

भावार्थ: प्रभु का ध्यान करते हुए वेदों में वर्णित विधि के अनुसार जीवन बिताओ। तब हृदय में सुख, शान्ति एवं आनंद प्राप्त होगा और प्राणी मोक्ष की प्राप्ति करेंगे।

समझो हरि भ्राता भूजन । नहीं शुभ चिंतक अन्य देवन ।।
पाएं अमृत उनके संकल्पन । हो मुक्ति आवागमन भुवन ।। (१३)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ही प्राणियों के भ्राता हैं। उनके समान हितकारी अन्य देवता नहीं है। उनके संकल्प से अमृत की प्राप्ति हो जाती है जिससे संसार में आवागमन से मुक्ति मिल जाती है।

हे शास्त्रवेता प्रमत जन । चाहो यदि पाएं सुख पावन ।।
करो स्तुति विष्णु भगवन । हैं वही आधार लोक व्योमन् ।। (१४)

भावार्थ: हे शास्त्रों के ज्ञाता बुद्धिमान पुरुषों, यदि आप परमानंद प्राप्त करना चाहते हैं तो हरि विष्णु की स्तुति करो, क्योंकि वही स्वर्गलोक के आधार हैं।

जैसे गौ माता शृंग किरन। करे प्रकाशित पथ त्रिभुवन।।
सलक्षण उत्कृष्ट हरि वर्पन्। करे प्रकाशित जन जीवन।।(१५)

भावार्थ: जिस प्रकार गौ माँ के सींग समस्त लोकों के मार्ग को प्रकाशित करते हैं उसी प्रकार भगवान् का उत्कृष्ट रूप प्राणियों के जीवन को प्रकाशित करता है।

हैं विष्णु देव वासी गगन। है यह शब्द विष-धातु निष्पन्न।।
दें ज्ञान प्राज्ञ संत और महन। अर्थ इसका सर्वज्ञ भगवन।।(१६)

भावार्थ: भगवान् विष्णु एक आकाश वासी देव हैं। यह शब्द विष-धातु से उत्पन्न है जिसका अर्थ ज्ञानी संत और महात्मा 'सर्वज्ञ प्रभु' बताते हैं।

तन अधिष्ठाता हैं नारायन। वाहन हैं गरुड़ खगेश्वरन।।
है वर्णित पुराण बामन। विक्रम और उरुक्रम नामन।।(१७)

भावार्थ: भगवान् विष्णु ही शरीर के स्वामी हैं। उनका वाहन खगों के स्वामी गरुड़ हैं। बामन पुराण में उन्हें विक्रम एवं उरुक्रम नाम दिया है।

है वास मधुसरोवर भगवन। करें सब देव वहां विचरन।।
लिए जब अवतार रूप बामन। त्रिपद से नापे त्रिभुवन।।
प्रथम पद था लोक भुवन। द्वितीय पद था लोक गगन।।(१८)
है स्थित तृतीय पग भगवन। द्युलोकस्थ सूर्यमण्डल गगन।।
हैं सूर्य प्रतिरूप नारायन। दें वही ऊर्जा त्रिभुवन।।(१९)

भावार्थ: भगवान् का वास मधुसरोवर है। वहां सभी देवता विचरण करते रहते हैं। जब प्रभु ने बामन रूप से अवतार लिया तब तीनों लोकों को तीन पग से नाप लिया। प्रभु का प्रथम पग पृथ्वी लोक पर था, द्वितीय पग अंतरिक्ष लोक में था। उनका तृतीय पग

सूर्य के द्युलोकस्थ सूर्यमण्डल में स्थित था। सूर्य देव भगवान् विष्णु के ही प्रतिरूप हैं। वही (सूर्य रूप में) तीनों लोकों को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

हैं मित्र इंद्रदेव के भगवन । करें रक्षा वह मरुत मरुद्गन ।।
हैं हेतु गर्भाधान भूजन । परोपकारी शरणागत जन ।। (२०)

भावार्थ: भगवान् इंद्रदेव के मित्र हैं। मरुत एवं मरुद्गण उनसे रक्षित हैं। प्राणियों के गर्भाधान के वही कारण हैं। शरणागतों की रक्षा करने वाले वह (अति) परोपकारी हैं।

हैं आधार चर अचर जीवन । हैं वह प्रिय ब्राह्मणगन ।।
हुए उत्पन्न कमल उनके तन । निकलीं गंगा उनके ही चरन ।। (२१)

भावार्थ: ब्राह्मणों के प्रिय चर एवं अचर जीवों के वह (विष्णु भगवान्) आधार हैं। उनके तन से कमल उत्पन्न हुए हैं। उन्हीं के चरणों से गंगा (माँ) निकली हैं।

हैं स्वेच्छाचारी श्री भगवन । करें वह पूर्ण सबके मन्मन् ।।
नमो नमो नियंत नारायन । हरो सब क्लेश आए शरन ।। (२२)

भावार्थ: अपनी इच्छा से भ्रमण करने वाले (प्रभु) सबकी मनोकामनाओं को पूर्ण करते हैं। हे प्रभु हम आपको नमन करते हैं। हम आपकी शरण में आ गए हैं, हमारे सभी कष्टों को दूर कीजिए।

गाएं विष्णु सूक्त हम भूजन । यह षट्मन्त्र करे शुभ सब जन ।।
करें वर्षा आनंद की भगवन । जो गाए यह महात्म्य नारायन ।। (२३)

भावार्थ: हम विष्णु सूक्त के छै सूक्तों (के हिंदी काव्यानुवाद) का गायन करते हैं जो सभी प्राणियों के लिए शुभ हैं। जो भी विष्णु भगवान् की इस महिमा का गायन करेंगे उनके जीवन में भगवान् आनंद की वर्षा करेंगे।

अथ श्री मित्रावरुणसूक्तम्

देखूं शाश्वत मण्डल द्युवन् । घिरा हुआ सब ओर जह्नन् ।।
मध्य जहां सहस्त्रों किरन । है स्थित एकदेव श्रेष्ठ वर्पन् ।। (२४)

भावार्थ: मैं सब ओर से जल से घिरे हुए अविनाशी सूर्यमण्डल को देखता हूँ, जहां सहस्त्रों किरणों के मध्य एकदेव श्रेष्ठ मूर्ति रूप में स्थापित है।

देखूं मित्र वरुण भगवन । हैं स्थित दोनों मण्डल द्युवन् ।।
हैं दोनों सूर्यदेव वर्पन् । घटक द्वादस इनके निरूपन ।। (२५)

भावार्थ: मैं भगवान मित्र एवं वरुण दोनों को सूर्य मंडल में स्थित देखता हूँ। यह दोनों सूर्यदेव के द्वादस रूपों के ही भाग हैं।

गाएं इनके महिमा मंडन । हरि मित्र और वरुण महन ।।
यही हेतु वर्षा इस भुवन । कारण प्रकाश सूर्य किरन ।। (२६)

भावार्थ: हम महान भगवान् मित्र एवं वरुण के ऐश्वर्य का गान करते हैं जिनके कारण ही पृथ्वी पर वर्षा होती है एवं सूर्य की किरणें प्रकाशित होती हैं।

करें स्तुति हम मित्र भगवन । रंक बने नृप जिनके पूजन ।।
दें विजय वरुण आशीर्वचन । पाएं यश भक्त समस्त भुवन ।। (२७)

भावार्थ: हम भगवान् मित्र की स्तुति करते हैं जिनकी भक्ति से रंक भी राजा बन जाते हैं। वरुण के आशीर्वाद से विजय मिलाती है और भक्त समस्त संसार में यश प्राप्ति करते हैं।

करें यही धरा शीश धारन । दोनों मित्र व् वरुण भगवन ।।
करें वह माता गौ पालन । हेतु औषधि जनि और वर्धन ।। (२८)

भावार्थ: यही दोनों देव मित्र एवं वरुण पृथ्वी को धारण करते हैं। यही गौ माँ का पालन करते हैं। यही औषिधियाँ की उत्पत्ति और वर्धन के हेतु हैं।

होता सुपथ रथ संचालन। दें निर्देश तुरग जब भगवन।।
हैं यह यज्ञ घृत स्वामिन। पाएं फल पुण्य करें अर्पन।।(२९)

भावार्थ: (मित्र एवं वरुण) जब यह अश्वों को निर्देश देते हैं तो रथ सुमार्ग पर संचालित होता है। यह यज्ञ में घृत के स्वामी हैं, जिसके अर्पण से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है।

दें यह जब जलदेव निर्देशन। हो प्रवाहित जल तब तटिन।।
है यह आधार जन जीवन। संभव सुख कृपा इन भगवन।।(३०)

भावार्थ: यह जब जलदेव को निर्देशित करते हैं तब जल नदियों में बहता है। (जल) यही सभी प्राणियों के जीवन का आधार है। इन्हीं देवताओं की कृपा से सुख प्राप्त होता है।

करें रक्षा मित्र वरुण भगवन। जैसे करें यजुमंत्र सुकर्मन।।
हैं यही हेतु उत्पन्न अन्न। होता जिससे जीवन पालन।।(३१)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण देव उसी प्रकार (अपने भक्तों की) रक्षा करते हैं जैसे यज्ञ करने वाले की यजु मन्त्र रक्षा करते हैं। यही अन्न की उत्पत्ति के कारण हैं जिससे जीवन का पोषण होता है।

मित्र और वरुण द्वि भगवन। करें रक्षा मध्य यज्ञ भक्तन।
करें यही यज्ञीय का पालन। करें यह यज्ञ स्तंभ को धारन।।(३२)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण, दो देव, यज्ञ के मध्य में (यज्ञीय की) रक्षा करते हैं। यजमान (यज्ञीय) के यही पालनहार हैं जो यज्ञ के स्तम्भों को धारण करते हैं (यज्ञ के फल इन्हीं के कारणों से प्राप्त होते हैं)।

हैं यह रहित दंभ और उष्मन् । है अति उदार हृदय भगवन ।।
सहस्त्रों यज्ञशाला चरन । करें धारण बिन कोई यत्न ।। (३३)

भावार्थ: (मित्र एवं वरुण) यह क्रोध और दम्भ से रहित हृदय से अति उदार प्रभु हैं। सहस्त्रों यज्ञशाला के स्तम्भों को बिना किसी यत्न के धारण किए रहते हैं।

रथ मित्र एवं वरुण भगवन । जड़ित मणि हैं निर्मित स्वर्न ।
आंतरिक सजावट इनके चरन । सुशोभित रत्न और कंचन ।। (३४)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण (देवों) के रथ मणि जड़ित स्वर्ण से निर्मित हैं। इनके रथों के स्तम्भ एवं आंतरिक सजावट भी स्वर्ण एवं मणियों से सुशोभित की गई है।

प्रभासित सम विद्युत् गगन । करें भ्रमण वह त्रिभुवन ।।
करें वह सर्वत्र सोम वितरन । सुर नर पूजित स्थान पावन ।। (३५)

भावार्थ: आकाश में बिजली की तरह चमकते हुए (यह रथ) वह तीनों लोकों का भ्रमण करते है। देव एवं प्राणियों से पूजित सब पवित्र स्थानों में अमृत वितरण करते हैं (अमृत वर्षा करते हैं)।

काल पूर्व उदय द्युवन् । करें यह यज्ञ स्थली भ्रमन ।
दें अखंडनीय भू दर्शन । कहे श्रुति अदिति प्रवर्तन ।। (३६)

भावार्थ: सूर्य उदय से पूर्व (उषा काल में) यह यज्ञ स्थलों का भ्रमण करते हैं। वहां अखंडनीय पृथ्वी पर अपने दर्शन देते हैं जिसे श्रुति अदिति भ्रमण कहती है।

करते भ्रमण भू दें वह दर्शन । सभी प्रजाति निवासी भुवन ।।
कहें प्राज्ञ इसे दिति दर्शन । है अति शुभ सुर असुर भूजन ।।
रथ उनका सम मृग निरूपन । करे उज्जवलित सम रवि किरन ।। (३७)

भावार्थ: (दोनों देव) समस्त भू मंडल पर निवासी प्रजातियों को दर्शन देते हैं, जिसे बुद्धिमान दिति दर्शन कहते हैं। यह सुर, असुर एवं प्राणियों के लिए अति शुभ है। हिरण के रूप समान आपका रथ सूर्य की किरण के समान चमकता है।

हे दानशील कर्ता जग पालन। मित्र और वरुण प्रभु महन।।
त्राहि त्राहि आए हम शरन। दो हमें ऐश्वर्य और धन।।(३८)

भावार्थ: हे जगत का पालन करने वाले दानशील महान मित्र एवं वरुण देव, हम आपके शरणागत हैं। हमारी रक्षा कीजिए, रक्षा कीजिए। हमें धन-धान्य एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति कराइए।

दो वर पाएं विजय द्वेषन। हो रहित कष्ट सुखी जीवन।।
हो सर्वानंद हमें इस भुवन। मृत्यु बाद पाएं निर्मोचन।।(३९)

भावार्थ: (हे मित्र एवं वरुण देव) आप हमें वरदान दें कि हम अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें। हमारा जीवन कष्टों से रहित सुखी हो। इस लोक में सर्व प्रकार शुभ मंगल हो और मृत्यु होने पर मोक्ष की प्राप्ति करें।

शब्द वरुण वृधातु उत्पन्न। कर निरोध ढके जो मेघ गगन।।
करे जो रात्रि को नियंत्रन। करते हुए स्वच्छंद नभ विचरन।।(४०)

भावार्थ: वृधातु शब्द से उत्पन्न वरुण का अर्थ है जो निरोध कर मेघों को आकाश में ढक दें। रात्रि का नियंत्रण करने वाले (वरुण) देव आकाश में स्वतंत्र रूप से विचरण करते हैं।

करो रक्षा हमारी मित्र भगवन। आप नियंत्रक दिन दें जीवन।।
आप करें वर्षा नियंत्रन। हो फलित कृषि उपजे अन्न।।(४१)

भावार्थ: दिन के नियंत्रक जीवन देने वाले मित्र देव हमारी रक्षा करो। आप वर्षा को नियंत्रित करते हैं जिससे कृषि फलित होती है और अन्न उत्पन्न होता है।

मित्र व् वरुण हैं रवि वर्पन् । इनकी कृपा सों रवि प्रसन्न ।।
हो निरोगी कंचन सम तन । जब पाएं इनके आशीर्वचन ।। (४२)

भावार्थ: मित्र एवं वरुण (दोनों ही देव) सूर्यदेव के ही स्वरुप हैं, इनकी कृपा से सूर्यदेव प्रश्ना होते हैं। (इन दोनों देवों के) इनके आशीर्वाद से शरीर निरोगी होकर स्वर्ण समान बनता है।

डॉ यतेंद्र शर्मा - सन १९५३ में एक हिन्दू सनातन परिवार में जन्मे डॉ यतेंद्र शर्मा की रूचि बचपन से ही सनातन धर्म ग्रंथों का पठन पाठन एवं श्रवण में रही है। संस्कृत की प्रारम्भिक शिक्षा उन्होंने अपने पितामह श्री भगवान् दास जी एवं नरवर संस्कृत महाविद्यालय के प्राचार्य श्री सालिग्राम अग्निहोत्री जी से प्राप्त की और पांच वर्ष की आयु में महर्षि पाणिनि रचित संस्कृत व्याकरण कौमुदी को कंठस्थ किया। उन्होंने तकनीकी विश्वविद्यालय ग्राज़ ऑस्ट्रिया से रसायन तकनीकी में पी.अच्.डी की उपाधी विशिष्टता के साथ प्राप्त की। सन १९८९ से डॉ यतेंद्र शर्मा अपने परिवार सहित पर्थ ऑस्ट्रेलिया में निवास कर रहें हैं, तथा पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के खनन उद्योग में कार्य रत हैं।

सन २०१६ में उन्होंने अपने कुछ धार्मिक मित्रों के साथ एक धार्मिक संस्था 'श्री राम कथा संस्था पर्थ' की स्थापना की। यह संस्था श्री भगवान् स्वामी रामानंद जी महाराज (१४वीं- १५वीं शताब्दी) की शिक्षाओं से प्रभावित है तथा समय समय पर गोस्वामी तुलसी दास जी रचित श्री राम चरित मानस एवं अन्य धार्मिक कथाओं का प्रवचन, सनातन धर्म के महान संतों, ऋषियों, माताओं का चरित्र वर्णन एवं धार्मिक कथाओं के संकलन में अपना योगदान करने का प्रयास करती है।

श्री राम कथा संस्थान

कार्यालय: ३५ मायना रिट्रीट, हिलरीज, पर्थ, ऑस्ट्रेलिया – ६०२५
वेबसाइट: https://shriramkatha.org
ई-मेल: srkperth@outlook.com
टेलीफोन: +६१ (०८) ९४०१ १५४३